Vijay Kumar, the
Deptt in History.
V.S.J. College Rajnagar
Degree Part II
Paper - IV.

Imperialism in China During 19th Century And the Opium Wars.

चीन के साथ भारत का व्यापारिक संबंध ईस्वी सन् के प्रारम्भ से था। पूर्व में चीन रोम को रेशम का निर्यात करता था। 1635 ई० में कई इसाई धर्म प्रचारकों ने चीन पहुंच कर धर्म प्रचार आरम्भ किया, किन्तु चीन ने शीघ्र ही इन प्रचारकों पर प्रतिबंध लगा दिया जिससे चीन और यूरप के संबंध में खटास उत्पन्न हुआ। 1275 ई० में वेनिस यात्री मार्कोपोलो ने चीन आया जिनसे यूरपवासीयों को चीन के बारे में कई जानकारी दी। 1498 ई० में पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा कैप-आफ-गुडहोप होते हुए भारत के कालीकट बन्दरगाह पहुंचे जहां से 1511 ई० में मलक्का द्वीप से चीन पहुंचे। 1542 ई० में पुर्तगालियों ने मकाओ द्वीप पर व्यापार करने की अनुमति प्राप्त कर ली। 1557 ई० में स्पेनवासी चीन आये तथा 1600 ई० में डच एवं 1637 ई० में अंग्रेज व्यापारी ने चीन पहुंचे। इन लोगो ने कैण्टन के बन्दरगाह पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिये। इन यूरप व्यापारियों ने क्रमश: व्यापार के लिये चीन के दरवाजा पर दस्तक दिया। कहा गया है कि चीन रूपी खरबूजे को टुकड़ा में काटकर ये यूरोपीय बांटकर खाना चाहते थे। यूरोपीय व्यापारीयों ने जहां चीन सामुद्रिक मार्ग से पहुंचे वहां रूस स्थल मार्ग से।

अंग्रेज व्यापारी चीन में अफीम के व्यापार करना चाहते थे जिससे अंग्रेजों के अन्य प्रतिद्वंदी पीछे

रह गये। चीन ने अंग्रेजी व्यापारियों पर प्रतिबंध लगाया। किंतु चीन यथेष्ट लाभ के लालच में व्यापार बन्द नहीं करना चाहते थे 18वीं सदी के अन्त तक कैण्टन व्यापार पर ईस्ट इण्डिया कंपनी का अधिकार था। ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा अफीम के व्यापार को लेकर चीन और इंग्लैण्ड में दो अफीम युद्ध हुए

प्रथम अफीम युद्ध 1840 ई० में हुआ जिसका मुख्य कारण निम्न थे —

(1) कयोतो प्रथा :- यह ऐसी प्रथा थी जिसमें अंग्रेज व्यापारियों को चीनि सम्राट के प्रति झुककर प्रणाम करना पड़ता था जिसे कयोतो प्रथा कहते है। इस प्रथा से अंग्रेजी व्यापारियों के मान मर्यादा पर पड़ता था क्योंकी ऐसे प्रणाम वे सिर्फ धर्म प्रधान पोप के लिये करता था। अतः वे इस प्रथा को समाप्त करना चाहते थे।

(2) व्यापारिक विषमता :- अंग्रेजों के पास कोई ऐसे वस्तु नहीं था जिसका निर्यात चीन में किया जा सके जबकि चीन से रेशम, रेशम, सोयाबिन, शिल्क इंग्लैण्ड निर्यात होते थे। चीन इन विदेशी व्यापारियों से मनमाना व्यवहार करते थे। इन विदेशीयों के कैन्टन बन्दरगाह से व्यापार करने की छूट थी। किंतु वे मकाओ में रहकर ही व्यापार कर सकते थे

(3) अंग्रेजो ने तम्बाकू में अफीम मिलाकर व्यापार करने लगे ताकि चीन के लोग इस अफीम की नशा का आदी हो जाय इस कार्य में चीन के अधिकारियों का भी सहमत थी क्योंकि इंग्लैण्ड के तरफ से उसे अच्छी रकम प्राप्त हो रहे थे। चोरी छीपे से अफीम चीन में चांदी के सिक्के देकर खरीदे जाते थे जिससे चीन का चांदी इंग्लैण्ड जाने लगा। इंग्लैण्ड ने कैन्टन पर अपना व्यापारिक एकाधिकार प्राप्त कर लिया इस प्रकार चीन में व्यापारिक संतुलन इंग्लैण्ड ने कायम कर दिया। चीन के सरकार ने 1820 ई० में

कैन्टन में व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया। 1834 ई० में अंग्रेज ने इस्ट इण्डिया कंपनी से व्यापारिक अधिकार ले लिये अब स्वतंत्र अंग्रेजी व्यापारी व्यापार करने लगे।

(4) अंग्रेजी व्यापारी पर कोई कानूनी कार्रवाई चीन के अदालत में होती थी, जिसका अंग्रेज विरोध करता था। 1839 ई० में अंग्रेज एवं चीनी नाविक व्यापारियों में आपसी झगड़ा हुआ जिसमें एक चीनी नाविक की हत्या हो गयी। चीन ने अंग्रेज व्यापारियों को कैन्टन से निष्कासित कर दिया। फलतः 1840 ई० में चीन और अंग्रेज के बीच 7 जुलाई 1840 में युद्ध हुआ। सिक्यांग पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया फलतः चीनी को विवश होकर नानकींग की संधि करनी पड़ी।

इस संधि से हांगकांग के द्वीप अंग्रेजों को मिला। कैंटन, मकाओ, फूचाओ, तिंगपो आदि बन्दरगाह ब्रिटिश व्यापारियों को मिला। दोनों देशों में सीधे क्रय विक्रय कि योजना बनी। आयात निर्यात पर नरम शुल्क पद्धति लागू हुई। चीन ने युद्ध क्षति पूर्ति के लिये 2 करोड़ 10 लाख डालर देना स्वीकार कर लिया। अंग्रेजों के मुकदमा अब अंग्रेजी अदालत में सुनवाई होगी ऐसा भी बना।

चीन के लिये ये नानकिंग संधि एक जहर कि घूंट की तरह था जिसे चीन पचा नहीं सके क्योंकि चीन अब एक अन्तर्राष्ट्रीय उपनिवेश बन गया।

चीनी अधिकारियों ने इस अपमान का बदला लेने कि ताक में लगा रहा और वे 12 सदस्यों को समुद्री लूट के अपराध में बन्दी बना लिया। अंग्रेज ने इनकी रिहाई कि मांग किया। चीन ने इन बन्दियों को मुक्त तो कर दिया कि अंग्रेजों के समक्ष को अफसोस प्रकट नहीं किया इससे अंग्रेज रिक्त हो गये और ब्रिटेन से चीन के

कैंटन पर आक्रमण कर दिया और तित्रसिन नामक जगह पर पहुँच गया। चीन हार स्वीकार किया तथा अंग्रेजों ~~का तित्रसीन~~ एवं चीन के बीच तित्रसीन नामक संधि हुई। यह संधि 1858 ई० में संभव हुआ।

इस संधि के अनुसार चीन अपनी 11 बन्दरगाह इन विदेशी व्यापारियों के लिये खोल दिया। पश्चिमी देशों के राजदूत को चीन अपने देश में रखना स्वीकार कर लिया। चीन धर्म प्रचारकों के सुरक्षा का उत्तरदायित्व लिया। अफीम के व्यापार को चीन ने वैध व्यापार मान लिया। युद्ध की क्षतिपूर्ति के लिये अंग्रेज को 40 लाख तायल तथा फ्रांस को 20 लाख तायल देना स्वीकार कर लिया। ~~चीन~~

चीनी सरकार ने तित्रसिन कि संधि मानने से इन्कार कर दिया अतः युद्ध पुनः आरम्भ हो गया। अन्ततोगत्वा चीनी सम्राट को यह संधि माननी पड़ी यह इतिहास में पीकिंग समझौता के नाम से जाना जाता है।

Scanned with Cam